निमंत्रण पत्र

(رسالة إلى هندوسي باللغة الهندية)

लेखक

सैयद मेराज रब्बानी

संपादन

साइट इस्लाम हाउस

प्रकाशक

इस्लामी आमंत्रण एवं निर्देशना कार्यालय

रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ।

प्रिय मित्र ! आशा है कि आप कुशल पूर्वक होंगे । यह एक धार्मिक पत्र है जो आप की सेवा में भेज रहा हूँ । इस पत्र का मक़सद आपको आपके जन्म के विषय में बतलाना है और यह ज्ञान देना है कि आपका असली जन्मदाता कौन है ? आपको यह स्वच्छ जीवन और शांति से भरा जीवन प्रदान करने वाला और रोज़ी देने वाला कौन है ? इस संसार को चलाने वाला और इस विशाल आकाश और धरती को बनाने वाला कौन है ? मुझे

भरपूर आशा है कि आप इस पत्र को पढ़ कर अवश्य विचार करेंगे और सही मार्ग जानने की कोशिश भी करेंगे ।

प्रिय मित्र ! इस विशाल संसार का इतना बड़ा गोला और इसमें विभिन्न प्रकार की अद्भुत चीजें और इसमें रहते बसते जीव-जन्तु ये सब के सब एक ऐसे महान मालिक के अधीन और उसी का आज्ञापालन कर रहे हैं, उसी के इशारे पर चलते हैं और उसी के गुलाम और प्रजा हैं जो मालिक बहुत बड़ी शक्ति और बहुत बड़ी ताक़त वाला है । जो जब चाहे, जो चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे, सब कुछ कर सकता है । उसके कामों में कोई भी बाधा नहीं डाल सकता । इस विशाल संसार में

उसका कोई भी भागीदार नहीं । उसके ऊपर किसी का हुक्म नहीं चलता । वही सब का हाकिम है । उसने किसी से जन्म नहीं लिया न उसको किसी ने जन्म दिया है । न ही उससे किसी ने जन्म लिया है । वह अकेला है, सब से बेपरवाह है, उसके कोइ माता-पिता नहीं और न ही उसके बीवी-बच्चे हैं । वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा । उसको कभी मौत नहीं आएगी और न ही उसको कभी नींद, या नींद की झपकी (ऊँघ) आती है । वह विशाल शक्तियों का मालिक है । उसे हम "**अल्लाह**" कहते हैं । जिसका अर्थ यह है कि जो मालिक इतनी बड़ी शक्तियों वाला है कि सारा संसार उसी का है और सब कुछ

उसी के अधीन है । अतः पूजा पाठ का असली हक़दार भी वही है । उसी का हक़ है कि उसके सामने झुका जाये और माथा टेका जाये । उसी से विनती की जाए, उसी से माँगा जाये और उसी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया जाये । उसके अलावा किसी भी जीव-जन्तु, देवी-देवता या किसी भी जिन्न, भूत, परी को न पूजा जाये, न उनसे कुछ माँगा जाये, न ही उनके सामने अपना शीश झुकाया जाए और न ही यह विश्वास रखा जाये कि अल्लाह के अलावा कोई कुछ बना बिगाड़ सकता है ।

एक बात ध्यान में रहे कि अल्लाह तआला का कोई रूप नहीं है, वह किसी के रुप में उपस्थित

नहीं होता और न ही वह किसी का रुप धारण करता है ।

प्रिय मित्र ! अगर आप आज्ञा दें तो एक बात पूछूँ ? हम कितने भोले-भाले और मूर्ख हैं कि हम उन चीजों की पूजा करते हैं जिन्हें अल्लाह ने हमारे लिये पैदा किया है । हम उन्हें अपना ईश्वर और भगवान मानते हैं जो खुद हमारे गुलाम और दास हैं । उनके अन्दर तनिक भी शक्ति नहीं कि वह हमारा कुछ बना बिगाड़ सकें । यहाँ तक कि अगर खुद उनपर कोई मक्खी बैठ जाये तो वे उसे हाँक और भगा नहीं सकते । हम कंकड़, पत्थर, नदी, नाले, चन्द्रमा, सूर्य, गाय, बैल, पेड़-पौधे यहाँ तक कि लिंग तक के सामने अपना सिर

झुका देते हैं । उनसे विनती करने लगते हैं । उनकी पूजा पाठ और उनके ऊपर चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं । और उनको अपना ईश्वर, दाता और भगवान मानने लगते हैं । भला सोचें तो सही कि वे हमें क्या दे सकते हैं ? वे तो बोल भी नहीं सकते । वे हिल भी नहीं सकते, अपना अच्छा-बुरा भी नहीं सोच सकते, तो वे हमारा क्या बना बिगाड़ सकते हैं ? और हमारे भोलेपन की तो हद् हो गई है कि हम ही में से एक आदमी गढ़े से मट्टी निकालता है । उसे सड़ाता है । पैरों और हाथों से गूँधता है, फिर उससे सरस्वती देवी की या राम-सीता या गणेश की मूर्ती बनाता है । मूर्ती बनाते वक्त देवी की छातियों को गोल

करता है । उसके गाल संवारता है और उसे कपड़ा पहना कर, बना संवार कर एक स्थान पर रखता है । फिर पंडित जी आते हैं और लोग इकट्ठा होकर उसकी पूजा शुरु कर देते हैं । बुन्दियाँ, जलेबियाँ, नारियल्, फूल-पत्तियाँ और रुपये-पैसे चढ़ाये जाते हैं । निर्जीव मूर्ती से विनती की जाती है । वहाँ सिर झुकाए जाते हैं और बहुत सी चीजें की जाती हैं जिनकी जानकारी आपको अवश्य होगी ।

प्रश्न यह है कि उस मूर्ती का बनाने वाला कौन है ? एक आम आदमी ही तो है, जिसने उसको बनाया, सजाया, संवारा । तो क्या भगवान इतना मजबूर है कि वह हमारा-तुम्हारा मुहताज हो ?

फिर मट्टी की बनाई हुई वह मूर्ती क्या ईश्वर हो सकती है ? वह तो बोल भी नहीं सकती, सुन भी नहीं सकती, देख भी नहीं सकती, चल फिर भी नहीं सकती, या उस पर जो खान-पान चढ़ाये जाते हैं वह उसे खा पी भी नहीं सकती बल्कि अगर उसके मुंह को कुत्ता चाटने लगे तो वह उसे भगा भी नहीं सकती । ज़रा विचार कीजिये कि अगर वह इतनी ही शक्तिशाली होती तो खुद ब-खुद बन जाती, वह किसी आदमी के बनाने की मुहताज न रहती । फिर जिसके अन्दर कुछ भी ताकत न हो, हृदय से पूछिये कि वे मूर्तियाँ या देवी-देवता, ईश्वर कैसे हो सकते हैं ? जो इतना मजबूर, लाचार व बेबस हों, वे भगवान कैसे हो

सकते हैं ? भगवान तो बहुत बड़ा है । वही सारे संसार का मालिक है । धरती और आकाश में जो कुछ भी है, सब उसी के अधिकार में है, कोई भी जीव जो इस धरती पर जन्म लेता है वह उसकी पकड़ से बाहर नहीं है । वह उसके पैदा होने, पलने-बढ़ने और मरने तक की जगहों को जानता है ।

अल्लाह तआला अपने पवित्र किताब में फरमाता है : "ऐ लोगो ! अपने उस पालनहार की उपासना करो जिसने तुम्हें और उन लोगों को जो तुम से पहले थे पैदा किया । ताकि तुम ईश्भय रखने वाले (संयमी) बन जाओ । जिसने तुम्हारे लिये धरती को बिछौना तथा आकाश को छत बनाया,

और आसमान से पानी उतार कर, उससे फल पैदा करके तुम्हें रोज़ी दी। इसलिए तुम जानने के बावजूद किसी को अल्लाह का साझीदार न बनाओ।"

अब आप सोचें कि हम कितने भटके हुये हैं। सही मार्ग से कितने दूर हैं। और कितने भोले हैं कि उस अल्लाह सर्वशक्तिमान जिसने हमें पैदा किया, प्यारी-प्यारी आँखे दी, नाक दी, हाथ और पैर दिए, जुबान दी, चलने और काम करने की ताक़त दी, सोच विचार करने और सही ग़लत सोचने के लिए दिल और दिमाग दिया, को छोड़ कर इन तथाकथित मूर्तियों की पूजा में लिप्त हैं।

प्रिय मित्र ! कितने लोग ऐसे हैं जो देवी देवताओं की मूर्तियों और कंकड़-पत्थर को अपना ईश्वर बनाकर पूजते हैं। उनकी छवियों तक को पूजते हैं। उनसे दया की भीख माँगते हैं। उनसे अपने दु:ख दर्द बयान करते हैं और उन्हें अपने भले बुरे का मालिक समझते हैं। ये उस अल्लाह तआला के साथ बहुत बड़ा अन्याय है जिसने आपको जन्म दिया और जो आपको जीविका देता और खिलाता पिलाता है।

प्रिय मित्र ! जो लोग अपने मालिक के गद्दार होते हैं वे किसी के साथ वफा नहीं कर सकते। यही कारण है कि हिन्दू समाज स्पष्ट रुप से टूट कर बिखर चुका है। क्योंकि हिन्दुओं की एक भारी

संख्या जो अपने आप को हिन्दू समझती है वह ब्राह्मणवाद के जुल्म व सितम (अत्याचार) और जात-पात की चक्की में पिस्ते पिस्ते हिन्दू इज़्म से उकता चुकी है, और ब्राह्मणों के बनाए हुए नियमों को अत्यंत घृणा से देख रही है।

यह एक कड़वा सत्य है कि हिन्दू धर्म कोई धर्म नहीं है बल्कि यह प्राचीन काल में लोगों के खुद अपनी बुद्धि से बनाए हुए जीवन गुज़ारने के नियम हैं। मगर इस्लाम तो अल्लाह सर्वशक्ति-मान की अज़ीम नेमत (महान अनुकम्पा और उपकार) है जो उसने सारे संसार के लोगों को तोहफे के तौर पर प्रदान किया है। यही कारण है कि अल्लाह तआला के इस बनाए हुए नियम में

मनुष्यों के बीच कोई ऊँच-नीच नहीं और न ही कोई जात-पात का भेद-भाव है। और न ही कोई छूत-छात है। अल्लाह तआला के यहाँ कोई छोटा या बड़ा नहीं, उसके यहाँ बड़ा वही है जो सब से ज़्यादा उसका सम्मान करता हो और उससे डरता हो।

परन्तु आप ज़रा हिन्दू धर्म पर दृष्टि डालें तो बड़ा आश्चर्य होता है कि हिन्दू धर्म ने किस तरह मनुष्य को चार टुकड़ों में बाँट रखा है। और यह विश्वास कर रखा है कि ब्राह्मण, ब्रह्मा के सिर से पैदा हुआ है। इस लिए सारे संसार में वही पवित्र और ईश्वर का मित्र है।

क्षत्री, ब्रह्मा के भुजाओं से पैदा हुआ है, वैश्य ब्रह्मा के टाँगों से पैदा हुआ है, शूद्र, ब्रह्मा के निचले पावों से पैदा हुआ है। इन चारों वर्गों में हर एक का काम अलग-अलग है।

ब्राह्मण को पूरी स्वतन्त्रता हासिल है, वह जो चाहे हिन्दू समाज में करे, जिसकी भी बहू बेटी ले ले, उसको कुछ भी नहीं कहा जाएगा, और जिसका भी माल खा ले, उसके लिए हलाल है।

शूद्र, ब्राह्मण की सेवा के लिए जन्म लिया है, उसका सब कुछ ब्राह्मण के लिए है। उसे मंदिर में पूजा पाठ करने यहाँ तक कि उसे अन्दर जाने तक की अनुमति नहीं मिलती, उसे अछूत समझा जाता है। मनु शास्त्र में है कि जब कोइ ब्राह्मण

पैदा होता है तो वह संसार में सब से श्रेष्ठ प्राणी होता है । वह सारे प्राणियों का राजा है । उसका काम है शास्त्र की सुरक्षा, जो कुछ इस संसार में है वह सब ब्राह्मण का माल है । चूँकि वह प्राणियों में सब से बड़ा है, (अतः) सभी चीजें उसी की हैं । (मनु शास्त्र, प्रथम अध्याय)

ब्राह्मण को यदि आवश्यकता हो तो वह बिना किसी पाप के अपने दास शूद्र का माल बलपूर्वक ले सकता है । इस अनुचित अधिकरण से उस पर कोई जुर्म लागू नहीं होता, क्योंकि दास जायदाद का मालिक नहीं हो सकता । उसकी कुल जायदाद ब्राह्मण का माल है । (मनु शास्त्र, अध्याय आठ)

जिस ब्राह्मण को ऋगवेद याद है वह गुनाह से पाक है यद्यपि वह तीनों लोकों का नाश क्यों न कर दे, अथवा किसी का खाना क्यों न खा जाए। (अध्याय नौ)

राजा को कैसी ही सख़्त ज़रुरत हो, वह मरता भी हो तब भी उसे ब्राह्मणों से महसूल न लेना चाहिए, और न अपने देश के किसी ब्राह्मण को भूख से मरने देना चाहिए। (अध्याय सात)

प्राण दण्ड के बदले में ब्राह्मण का केवल सिर मूँडा जायेगा, परन्तु अन्य जातियों के लोगों को प्राण दण्ड दिया जायेगा। (अध्याय सात)

यदि शूद्र दिविजों पर हाथ अथवा लकड़ी उठाये तो उसका हाथ काट डाला जायेगा, और अगर

क्रोध में आकर लात मारे तो उसका पैर काट डाला जायेगा। अगर कोई शूद्र किसी दिविज के साथ एक ही जगह बैठना चाहे तो उसका सुरीन (चूतड़) दागा जाये और उसे देश निकाला कर दिया जाए। (मनु शास्त्र, अध्याय आठ)

इसी तरह मनु शास्त्र में यह भी है कि : और अगर कोई शूद्र किसी ब्राह्मण को हाथ लगाये या गाली दे, तो उसकी ज़बान तालू से खींच ली जाये। अगर इस बात का दावा करे कि वह उसे शिक्षा दे सकता है, तो खौलता हुआ तेल उसको पिलाया जाये। और यह कि : कुत्ते, बिल्ली, मेढक, छिपकली, कौवे, उल्लू और शूद्र को मारने का दण्ड बराबर है।

प्रिय मित्र ! भला विचार करें कि क्या ईश्वर इस तरह अपने प्रजाओं पर अत्याचार कर सकता है ? कभी नहीं, वह इस तरह अपने मानने वालों के बीच फर्क़ नहीं करता ।

वह अल्लाह तआला तो अपने पवित्र कुरआन में यह कहता है : ऐ लोगो मैंने तुम सब को पैदा किया है । तुम सब के माँ-बाप एक हैं, मैं ने इस लिए तुम सब को अलग-अलग रखा हुआ है ताकि तुम एक दूसरे से प्रेम और मेल व्यवहार करो । याद रखो तुम में मेरा नज़दीकी वह है जो सब से ज़्यादा मुझ से डरने वाला हे । यह है अल्लाह तआला का आदेश और उसका पैगाम और यही है इस्लाम की पुकार । और इस्लाम नाम है

अल्लाह तआला के आदेशों का अनुवर्तन और उसका आज्ञापालन करने का, और इस्लाम शब्द का एक दूसरा अर्थ भी है सुलह, शांति, कुशलता, संरक्षण आदि । मनुष्य को वास्तविक शांति उसी समय मिल सकती है जब वह अपने आप को अल्लाह तआला के हवाले (समर्पित) करदे और उसी के आदेशों के अनुसार जीवन गुज़ारने लगे । ऐसे ही जीवन से दिल को शांति मिलती है और समाज में भी उसी से वास्तविक शांति की स्थापना होती है । वास्तव में अगर हम देखें तो संसार में जितनी भी चीजें हैं सब मुसलमान हैं । चाँद और तारे, पृथ्वी और आकाश, सूर्य और प्रकाश, ताप और जल आदि, ये सब अल्लाह

तआला ही के बनाये हुये नियम और विधि के अधीन हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने उन के लिए जो भी मार्ग नियत किया है ये सब उसके तनिक भर खिलाफ नहीं करते। और मनुष्य भी अगर अपने शरीर में विचार करे तो उसे पता चल जायेगा कि उसके शरीर का एक-एक अंग वही काम कर रहा है जो उसके लिये निर्धारित है।

ये प्रबल नियम जिस में बड़े-बड़े ग्रहों से लेकर भूमि का छोटे से छोटा कण तक जुड़ा है, एक महान शासक का बनाया हुआ नियम है और पूरी दुनिया उसी शासक के आदेश और उसी की आज्ञा का पालन करती है। इसलिए सम्पूर्ण विश्व का धर्म इस्लाम है।

प्रिय मित्र ! अन्त में हम आप से यह कह कर अनुमति चाहते हैं कि आप इस्लाम धर्म को, उसके नियमों और उसके आदेशों को पढ़ें और विचार करें कि क्या हम वास्तव में अपने मालिक सर्वशक्तिमान अल्लाह के वफादार हैं ? धन्यवाद !

आप का मित्र

सैयद मेराज रब्बानी

इस्लामिक दावा एन्ड गाइडेन्स सेन्टर
हाइल, सऊदी अरब फोन न. ५३३४७४८
फैक्स- ५४३२२११, पोस्ट बाक्स न. २८४३